प्रतिष्ठा का व्यामोह

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरूत्थान कार्यक्रम दृष्टिशोधन का कार्यक्रम है। जब दृष्टि सम्यक् रहती है तब किसी पद या प्रतिष्ठा की लालच नहीं होती। पद और प्रतिष्ठा एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। पद मिलता है तो प्रतिष्ठा की प्राप्ति स्वयं हो जाती है। हर व्यक्ति प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है किन्तु हर व्यक्ति प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसे कौनसे सूत्र हैं जिनसे प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो सकती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्रतिष्ठा समाज में ही मिलती है। मनुष्य की दिमाग में अनेक विचारधाराएं रहती हैं, जिनके द्वारा वह प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। प्रतिष्ठा प्राप्त करने का सूत्र है–मैत्री। मैत्रीभावना से एक–दूसरे के साथ प्रेम प्रदर्शित किया जाता है। मैत्री में सबको समान भाव से देखा जाता है। समाज का हर व्यक्ति प्रतिष्ठा प्रिय होता है। प्रतिष्ठा का अर्थ है सम्मान, मान–मर्यादा की प्राप्ति। प्रतिष्ठा कब मिलती है? जब व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करता है तब समाज में वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। सामाजिक कार्य के साथ अपनी प्रतिष्ठा को जोड़ो तो अच्छा है। मनुष्य के लिए स्वार्थ से अच्छा परार्थ और परार्थ से अच्छा परमार्थ है। आत्मकेन्द्रित होने से मानव को समाज में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जब परोपकार या समाजहित के लिए कार्य किया जाता है तो मनुष्य का मूल्यांकन समाज करता है। प्रतिष्ठा स्वयं नहीं प्राप्त होती, बल्कि प्रतिष्ठा समाज द्वारा दी जाती है। प्रतिष्ठा से इज्जत बढ़ती है।मित्रता प्रेम की रसायन है। चौरासी लाख जीव यौनियों के साथ आत्मवत् भाव रखना मैत्री का सूत्र है। प्रतिष्ठा प्राप्त करना अच्छी बात है, परन्तु प्रतिष्ठा का व्यामोह बुरा है। व्यामोह आसक्ति को जन्म देता है। आसक्ति सभी प्रकार के पापों की जड़ है।

प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए पुरूषार्थ की आवश्यकता होती है। जब विद्यार्थी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारत करता है तो लक्ष्य के अनुरूप उसे परिश्रम भी करना पड़ता है। प्रशासनिक क्षेत्र, चिकित्सकीय क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र या किसी प्रकार के अन्य क्षेत्र में जाने के लिए पहले से ही लक्ष्य निर्धारित करना पड़ता है और उसी के अनुरूप पुरूषार्थ भी करना पड़ता है। प्रतिष्ठा

पुरूषार्थ के पीछे चलती है। जितने भी महापुरूष हुए हैं उन्हें अपने जीवन को चरित्रार्थ करने के लिए अनेक कष्ट सहन करने पड़े। अंत में जाकर वो आज समाज में प्रतिष्ठित हैं। प्रतिष्ठा प्राप्त होने बावजूद भी जो व्यक्ति सबको साथ लेकर चलता है और सबके साथ अच्छा व्यवहार करता है, समाज में उसे प्रतिष्ठा उसे स्वयं प्राप्त हो जाती है। पद प्राप्त करने के बाद यदि अहंकार की भावना आ जाये तो वह निंन्दनीय हो जाता है। पद और प्रतिष्ठा का उपयोग दूसरों की भलाई और राष्ट्र हित के लिए करना चाहिए। विलासिता और रंगरैलियों में समय को नहीं बिताना चाहिए। ऐसा करने से पद और प्रतिष्ठा धूमिल हो जाती है। प्रतिष्ठा व्यक्ति के कार्य का प्रोत्साहन है। जो समाज और राष्ट्र के लिए अच्छे कार्य करते हैं उन्हें सम्मान देने के लिए भारत सरकार भी भारत के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित करती है। भारत सरकार के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को अनेक पुरस्कार दिये जाते हैं। ये सम्मान व्यक्तियों के कार्यों के आधार पर उनके मूल्यांकन के पश्चात् दिया जाता है। कोई स्वयं यह पुरस्कार नहीं प्राप्त करता, बल्कि यह पुरस्कार प्रोत्साहन के लिए दिया जाता है। भारत में जितने भी भारत रत्न प्राप्त कर्त्ता हैं उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके देश को ऊँचाई पर पहुँचाया है। लोककल्याण के लिए जो कार्य करते हैं उनका मूल्यांकन स्वयं हो जाता है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर में प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं था। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों का उपदेश देकर जनता को सन्मार्ग प्रदान किया। जीवन में अनेक कष्टों को सहकर भी लोककल्याण के लिए कार्य किया। इसी का परिणाम हैं कि आज भी उनके सिद्धान्तों को लोग जीवन में पालन करते हैं।

वर्तमान सन्दर्भ में यदि देखा जाये तो मनुष्य स्वार्थी हो गया है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का नुकसान करने में भी नहीं हिचकता। आज गरीबों और अमीरों के बीच खाई बढ़ती जा रही है। सभी को जीने और सुख प्राप्त करने का अधिकार है। जीने का मतलब यह नहीं है कि झुग्गी–झोपड़ियों में जीवन–यापन किया जाये। योग्यता के अनुसार सबको कार्य करने का मौका मिलना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं रहेगा। आजकल प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लोग बहुत सा दिखावा करते है। अहंकारी व्यक्ति दूसरों को तृण के समान समझता है। उसके लिए दूसरों के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। हमारे देश में ऐसे

अनेक महापुरुष हुये है जिनके पीछे प्रतिष्ठा चलती थी। इस सम्बन्ध में पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। एक उच्च कोटि के साहित्यकार होते हुये भी उन्होंने प्रतिष्ठा को कोई महत्व नहीं दिया। आज जब उनका मूल्यांकन किया जाता हैं तो प्रथम पंक्ति के साहित्यकारों में उनकी गणना होती है। उन्होंने समाज के दबे कुचले वर्ग के लिए आवाज उठाई। समाज में निम्नवर्ग के लोगों को सम्मान दिलाने के लिए उनका साहित्य समर्पित है। ऐसे अनेक महापुरुष हुये हैं जो समाज के लिए जिये और समाज के लोगों के कंठहार बन गये।